IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

वैश्वीकरण के युग में नारी सशक्तिकरण

सारिका
शोधार्थी
डॉ. राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या
प्रोफेसर डॉ. अनिल कुमार श्रीवास्तव
शोध निर्देशक
(अध्यक्ष समाजशास्त्र विभाग)
जवाहरलाल नेहरू मेमोरियल पोस्टग्रेजुएट महाविद्यालय, बाराबंकी

सारांश

वैश्वीकरण केवल आधुनिक युग की अवधारणा नहीं है, इसका प्रभाव और विकास प्राचीन काल से ही देखा जा सकता है। हालांकि, इसका मुख्य केंद्र और प्रभाव आधुनिक युग में ही हुआ है। वैश्वीकरण का विकास और प्रभाव एक विशिष्ट सामाजिक स्थिति को दर्शाता है, जिसमें आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और पर्यावरणीय संदर्भ स्थापित हुए हैं और वे सक्रिय रूप से विकसित हो रहे हैं। वैश्वीकरण ने पूंजीवाद और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की संरचना में महत्वपूर्ण परिवर्तन लाए हैं, और यह नवाचार और उत्पादन की दक्षता में वृद्धि के साथ ही एक नए वैश्विक बाजार की आवश्यकता पैदा करता है। रॉबिन्सन के अनुसार, वैश्वीकरण के विकास को तीन चरणों में विभाजित किया गया है। अन्य विद्वान जैसे रोस्टोव वैश्वीकरण विकास को पांच भागों में विभाजित करते हैं, जिसमें राष्ट्र राज्य के उदय और धर्म के नियंत्रण का कमजोर होना शामिल है।

20वीं सदी के अंत और 21वीं सदी की शुरुआत में वैश्वीकरण की प्रक्रिया के परिणामस्वरूप महिला सशक्तिकरण में वृद्धि हुई है, हालांकि इसका व्यापक प्रभाव सकारात्मक और नकारात्मक दोनों रहा है। वैश्वीकरण ने जहां एक ओर महिलाओं को आर्थिक स्वतंत्रता दी है, वहीं दूसरी ओर इसका प्रभाव कुछ क्षेत्रों में महिलाओं के शोषण और असमानताओं को भी बढ़ा है। महिलाओं को उपभोक्ता और उत्पादक के रूप में नई भूमिकाओं में प्रस्तुत किया जा रहा है, लेकिन उनके अधिकार और सुरक्षा पर लगातार सवाल उठते रहे हैं। इस संदर्भ में, महिलाओं के अधिकारों और सुरक्षा को सुनिश्चित करने की दिशा में ठोस कदम उठाने की आवश्यकता है, ताकि वैश्वीकरण का समग्र रूप से सकारात्मक प्रभाव हो सके।

महत्वपूर्ण शब्द : ***'वैश्वीकरण'*** *– विश्व के विभिन्न देशों और समाजों के बीच बढ़ती आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक अंतरसंबंध।*

आर्थिक असमानता : *समाज में धन, आय और संसाधनों के असमान वितरण को संदर्भित करता है।*

उपभोक्तावाद : *एक सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था, जिसमें लोग अधिक से अधिक वस्त्र, वस्तुएँ और सेवाएँ खरीदने के लिए प्रोत्साहित होते हैं।*

वैश्वीकरण बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध की विषयवस्तु है तथापि इसके उद्भव का समय प्राचीन काल तक जाता है। प्राचीन काल में धर्म जुड़ाव का एक प्रमुख का आधार था। चाहे वह सम्राट अशोक के धम्म की बात हो या चाहे ईसाई मिशनरियों द्वारा ईसाई धर्म के प्रचार या फिर इस्लाम आक्रान्ताओं द्वारा इस्लाम धर्म का प्रचार की बात

हो। ये सभी तत्कालीन समय में एक साम्राज्य को दूसरे साम्राज्य से जोड़ने अथवा प्रभावित करने के सन्दर्भ में अत्यंत महत्त्वपूर्ण थे। यह सर्वमान्य है कि वैश्वीकरण आधुनिक युग की अवधारणा है मगर वैश्वीकरण के विकास की मूलभूत कारण एवं कालक्रम के सन्दर्भ में विद्वान एकमत नहीं है। वैश्वीकरण के संबंध में यह कहा जा सकता है कि वैश्वीकरण एक विशेष प्रकार की सामाजिक स्थिति है, जिसमें वैश्विक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं पर्यावरणीय अन्तः सम्बन्ध स्थापित हैं और वे गतिशील हैं और जिनके कारण इस स्थिति के पूर्व में स्थापित सभी प्रकार की सीमाओं को अप्रासंगिक बनाते हैं। वहीं वैश्वीकरण के बारे में **'फ्रेडरिक जेमसन'** ने अपने लेख लेट कैपिटेल्ज़िम में बताया है कि 'वैश्विक बाजार की असीमितता को भी लिया जा सकता है, ये दोनों बातें आधुनिकता के किसी भी चरण से अधिक व्यापक एवं प्रभावी हैं।[(1)]'

वैश्वीकरण के अवधरणात्मक विकास के संदर्भ में रॉबी रॉबर्टसन की मान्यता विशेष उल्लेखनीय है। रॉबी रॉबर्टसन ने सन 2002 में प्रकाशित अपनी प्रमुख पुस्तक **'द थ्री वेब्स ऑफ ग्लोबलाइजेशनः ए हिस्ट्री ऑफ ए डेवलपिंग ग्लोबल कंसेशनेस'** में वैश्वीकरण के विकास को निम्नलिखित तीन चरणों में वर्गीकृत किया हैः–

प्रथम चरण में वर्ष 1492 से 18वीं सदी के औद्योगिकरण तक, विभिन्न खोजों, आविष्कारों के द्वारा विश्व के देशों के बीच से प्रारंभ करके औद्योगीकरण के पूर्व की व्यापार प्रक्रिया को शामिल किया जाता है। वहीं दूसरी लहर की बात करें तो 18वीं सदी से द्वितीय विश्व युद्ध के पूर्व तक, जिसमें वैश्वीकरण के विकास के पीछे प्रमुख कारण, औद्योगीकरण से प्राप्त अधिक उत्पादकता रही है। परिणामस्वरूप विभिन्न औद्योगिक देशों को अधिक उत्पादकता के कारण नए बाजार की आवश्यकता ने विभिन्न देशों में आर्थिक व सामाजिक जुड़ाव को प्रेरित किया। यह वह दौर था जब समूचे वैश्विक परिदृश्य पर उपनिवेशवाद हावी था और नतीजन वैश्वीकरण का द्वितीय लहर इस माना जाता है। वैश्वीकरण के विकास की तीसरी लहर का दौर द्वितीय विश्व युद्ध के उपरांत विभिन्न देश स्वतंत्र होते गए, नई अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं एवं संगठनों की स्थापना हुई तथा सन् 1980 के दशक तक आते आते वैश्वीकरण ने एक व्यापक रूप धारण कर लिया। रॉबी रॉबर्टसन की मान्यता का समर्थन वैर्लेस्टीन भी करते हैं। वैर्लेस्टीन वैश्वीकरण के विकास के संदर्भ में पूंजीवाद को प्रमुख कारण मानते हैं। उनका कहना है कि रेनेसों के साथ ही वैश्वीकरण का विकास प्रारंभ हो गया था। वैर्लेस्टीन का मानना है कि पूंजीवाद की बढ़ती प्रवृत्ति से उत्पादन बढ़ा है तथा एक नई बाजार व्यवस्था का जन्म हुआ है, जिसका स्वरूप अंतरराष्ट्रीय हो गया है। यह बाजार व्यवस्था पूंजीगत लाभ के लिए उद्योगपतियों को आकर्षित करने लगी, जिसके फलस्वरूप कच्चे माल, सस्ते श्रम व नए बाजार की खोज आरंभ हुई। इसके साथ–साथ निवेश में भारी वृद्धि से और अधिक उत्पादन और इससे अधिक लाभ प्राप्त करने की उत्कंठा ने एक 'विशेषीकृत व्यापार चक्र' को जन्म दिया जिसके परिणामस्वरूप ऐसी बहुराष्ट्रीय कंपनियों व निगमों का उदय हुआ जिसके प्रभाव में वैश्वीकरण का अस्तित्व और मजबूत होता चला गया।[(2)]

इसी प्रकार एक अन्य विद्वान रोनाल्डो रॉबर्टसन ने वैश्वीकरण के विकास क्रम को पांच अन्य भागों में विभाजित किया है, जो कि वर्ष 1480 से वर्ष 1750 तक, वैश्वीकरण के आरम्भिक बीजाणु का युग, जिसमें राष्ट्र राज्य पर धर्म की पकड़ शिथिल हुई जो कि वर्ष 1750 से वर्ष 1875 का युग, वैश्वीकरण के उद्भव का युग, जिस में यूरोप में राष्ट्रवाद व अंतर्राष्ट्रीयतावाद फल–फूल रहे थे। वर्ष 1875 से वर्ष 1925 का युग, अर्थात् वैश्वीकरण के विस्तार का युग, जिसमें उपनिवेशवाद अपने चरम पर था। वर्ष 1925 से वर्ष 1969 का युग, अर्थात् प्रभुता के लिए संघर्ष का युग, जिसके उपरान्त संयुक्त राष्ट्र संघ सहित कई अन्य अंतर्राष्ट्रीय संगठनों की स्थापना की गई। तत्पश्चात् वर्ष 1969 से

वर्ष 1992 का युग, जिसमें शीत युद्ध की शिथिलता तथा सोवियत संघ के विघटन के उपरांत उदारीकरण, निजीकरण एवं वैश्वीकरण का आधुनिक युग प्रारंभ हुआ।[3]

वैश्वीकरण के विकास के संदर्भ में एक अन्य चरण के रूप में वर्ष 1993 से अब तक के समय को भी सम्मिलित किया जा सकता है। इस दौरान विश्व को आर्थिक मंदी का सामना करना पड़ रहा था तथा यहीं से उदारीकरण का व्यापक दौर प्रारंभ हुआ। अंतरिक्ष में शोध का स्तर बढ़ता गया। इसके साथ–साथ विभिन्न विश्व स्तरीय समस्याएं भी उभर कर सामने आई, यथा पर्यावरणीय समस्या, ग्लोबल वार्मिंग, आतंकवाद आदि, जो विश्व समुदाय को एकजुटता के लिए प्रेरित करता है, तथा परिणामस्वरूप वैश्वीकरण का वृहद स्तर पर विस्तार हुआ। इन्हीं परिस्थितियों ने राष्ट्र राज्य की अवधारणा को 'अंतर्राष्ट्रीयतावाद व अंतर्राज्य व्यवस्था' की अवधारणा में प्रतिस्थापित कर दिया।[4] जिसके परिणामस्वरूप जहां एक ओर वैश्वीकरण सुदृढ़ होता गया वहीं एक राष्ट्र की निजता निरंतर कमजोर होती गयी। इस क्रम में बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में आई सूचना क्रांति ने संपूर्ण विश्व परिदृश्य को ही बदल दिया है। मोबाइल फोन, स्मार्टफोन के साथ–साथ फेसबुक, व्हाट्सएप, ट्विटर आदि के माध्यम से विश्व भर की सूचनाएं हमें बिना विलंब किए प्रप्त होना संभव हो गया है, जिससे परिणाम स्वरूप 'साइबर क्राइम', आतंकवादी घटनाओं में भी वृद्धि हुई है।

औद्योगिकीय विकास ने जीवन को विभिन्न सुविधाओं से युक्त तो किया, किन्तु धनलोलुपता और व्यापारिक लाभ के लिए विकासशील देशों से सस्ते श्रम के रूप में जो कदम उठाए गए उनमें एक ओर आर्थिक भेदभाव बढ़ा तो दूसरी ओर सामाजिक सशक्तिकरण की दिशा में सफल प्रयास किए गए।

20वीं सदी में लोकतांत्रिक व्यवस्था की बहुलता तथा लोक कल्याणकारी शासन व्यवस्था के साथ निरंतर समतामूलक समाज की स्थापना की मांग जोर पकड़ती गई। विभिन्न देशों में इसके लिए आंदोलनों की शुरूआत हुई। स्त्री मताधिकार, स्त्री पुरुष समानता आदि मुद्दों को विभिन्न आंदोलनों के आधारभूत मुद्दों के रूप में स्वीकृति मिली। वैश्वीकरण के दौर में लैंगिक विषयों पर आधारित आंदोलन का स्वरूप एक राष्ट्र राज्य की सीमा से बाहर निकलकर वैश्विक होता गया। विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय मंत्रों, विभिन्न साहित्यिक रचनाओं में स्त्रियों के आर्थिक विकास में भागीदारी, सामाजिक न्याय की स्थापना के मुद्दों को प्रमुखता दी गई। भारत सहित अनेक विभिन्न देशों में राजनीतिक संस्थाओं में महिलाओं के लिए आरक्षण की मांग जोरों पर रही। भारत में तो स्थानीय स्तर पर राजनीतिक निकायों में एक तिहाई स्थानों का आरक्षण पहले से ही विद्यमान है। वैश्वीकरण ने जहाँ कुछ महिलाओं को रोजगार का व्यापक अवसर प्रदान किया है तो वहीं बहुत सी महिलाओं को हाशिए पर भी ढकेला है। देश एवं समाज को उन्नत बनाने के वैश्वीकरण के दावे में कितनी सच्चाई है इसे उसकी आलोचनात्मक मूल्यांकन से देखा जा सकता है। निःसंदेह वैश्वीकरण के युग में महिलाओं की उन्नति और विकास के लिए पर्याप्त अवसर उपलब्ध हुए हैं। वैश्वीकरण की प्रक्रिया के अंतर्गत महिलाओं को राष्ट्र की सामाजिक, आर्थिक व राजनीति प्रकृति में भागीदार बनाए जाने के प्रयत्न भी किए जाते रहे हैं।[5] निरन्तर महिलाओं के अनुकूल रोजगार का निर्माण भी किया जा रहा है। आज महिलाएं स्वयं को ज्यादा स्वतंत्र और आत्मनिर्भर महसूस कर रही हैं और विकास की प्रक्रिया में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ रही हैं।

वैश्वीकरण के साथ उदारीकरण व निजीकरण भी आया, जिसके परिणामस्वरूप आरम्भ हुए मशीनीकरण के युग में महिला कामगारों की संख्या निरन्तर कम हुई है। मशीनीकरण के युग में महिला कामगारों की संख्या निरन्तर कम हुई हैं। मशीनीकरण के सन्दर्भ में यह माना जाता है कि एक मशीन एक समय में कई कामगारों का काम अकेले ही कर सकती है। निजी क्षेत्र की बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के संदर्भ में यह स्थिति और भी चिन्ताजनक है। अगर निजी

क्षेत्र की बहुराष्ट्रीय कम्पनियों द्वारा महिला कामगारों को काम दिया भी जा रहा है तो ऐसे कामगार को जो अच्छी शिक्षा प्राप्त हैं, युवा हैं, न कि ऐसी महिला कामगार को जो कहीं कार्यरत थी और किसी कारण वश उसे काम से निकाल दिया गया हो। इसके साथ–साथ वैश्वीकरण के परिणामस्वयप महिलाओं के विरूद्ध होने वाली घटनाओं में भी वृद्धि देखी गयी है।

महिलाओं के विकास, महिला सशक्तिकरण के लिए वैश्वीकरण के विभिन्न प्रयत्नों के बावजूद भारत में इसका प्रभाव कई क्षेत्रों में सकारात्मक होने के साथ–साथ व्यापक रूप से नकारात्मक भी रहा है। सबसे पहले तो बहुराष्ट्रीय कंपनियों के दौर में महिलाओं का वस्तुकरण हो रहा है, वे प्रदर्शनीय वस्तु की चीज बनती जा रही है, कंपनियों द्वारा अपने उत्पादों की बिक्री हेतु महिलाओं को विज्ञापनों के माध्यम से अश्लील व असंवेदशीलता के साथ शारीरिक व मानसिक रूप से निम्नतर एवं उत्पाद के रूप में गलत ढंग से प्रस्तुत किया जा रहा है।[6]

आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण 2022–2023 के अनुसार भारत में लगभग कुल श्रमिकों का 37.0 प्रतिशत हिस्सा महिला श्रमिकों का है, जिसमें से ग्रामीण क्षेत्रों में 60.8 प्रतिशत तथा शहरी क्षेत्रों में 50.4 प्रतिशत महिला श्रमिक के रूप में पहचानी गयी किन्तु इसमें असंगठित क्षेत्रों कार्य करने में महिलाओं की भागीदारी **ई–श्रम नेशनल डेटाबेस मार्च 2022 के अनुसार** 52.7 प्रतिशत है। ये ऐसा क्षेत्र है, जिनमें ना तो अच्छा वेतन है, ना काम के निश्चित घंटे, ना ही काम की उचित मानवीय दशा, ना कोई काम की सुरक्षा (रोजगार सुरक्षा का अभाव), और ना ही सामाजिक सुरक्षा की पर्याप्त व्यवस्था उपलब्ध होती है।[7] प्रतिस्पर्धा के युग में उत्पन्न तनाव, महिलाओं में मानसिक व शारीरिक थकान, काम के लंबे घंटे आदि स्वास्थ्य के लिए तो हानिकारक है ही साथ ही ये सभी परिस्थितियाँ सामाजिक व पारिवारिक संबंधों के लिए भी घातक हैं। ये परिस्थितियाँ औरत के सन्दर्भ में सामाजिक न्याय की स्थापना की दृष्टि से सबसे बड़ी बाधा रही है। वैश्वीकरण के चलते बी0पी0ओ0, कॉल सेंटर आदि महिलाओं हेतु रोजगार बनकर उभरे हैं, पर इनमें काम करने वाली महिलाओं की सुरक्षा पर अक्सर सवाल खड़े होते रहे हैं। वैश्वीकरण ने महिलाओं को जहां एक ओर उपभोक्ता बनाया है तो वहीं दूसरी ओर उन्हें उत्पादक भी बनाया है। इस संबंध में जर्मनी की समाजशास्त्रीय प्रोफेसर **मारिया मीस** ने वैश्वीकरण का महिलाओं पर प्रभाव का अध्ययन किया है। जिसके अन्तर्गत उन्होंने माना है कि वैश्वीकरण से महिला एकता में बाधा उत्पन्न हो रही है क्योंकि वैश्वीकरण की प्रक्रिया उपभोक्ता और उत्पादक के बीच तनाव उत्पन्न करता है। वैश्वीकरण के फलस्वरूप एक देश में महिलाएं सामान बनाती है और दूसरे देश में बेचती हैं। इस सन्दर्भ में यदि हम कपड़े के उद्योग का उदाहरण लें तो कपड़े के उद्योग में काम करने वाली महिला कपड़े की बिक्री हेतु उचित दाम का मांग करेंगी, किन्तु वहीं उसे खरीदने वाली महिला कपड़े को कम से कम दाम में खरीदने की कोशिश करेंगी। ऐसे में दोनों के आपसी हितों के मध्य टकराव उत्पन्न होगा और महिला एकता का बन्धन निरन्तर कमजोर होगा। इसीलिए **मारिया मीस** ने अपने अध्ययन में बताया कि वैश्वीकरण की प्रक्रिया महिला एकता में बाधक सिद्ध होगी तथा जिसका प्रभाव सम्पूर्ण मानव जाति पर पड़ेगा। वैश्वीकरण ने इस द्वंद्व की उपस्थिति को जन्म दिया है जिसमें महिलाओं ने अपने पारंपरिक दायित्व के निर्वहन तो किया ही है, इसके साथ ही आधुनिक दृ ष्टिकोण को भी अपनाया है जिसमें महिलाओं ने आर्थिक सशक्तिकरण को तरजीह दी है, सशक्तिकरण का अर्थ समान रूप से कार्य करने और सामाजिक सुरक्षा में भाग लेने तथा बाजरो, संसाधनों तक उनकी पहुंच और समाज में राष्ट्र व अंतर्राष्ट्रीय स्तर किसी भी मंच पर अपनी बात रखने और आर्थिक निर्णय में भूमिका निभाने की बात करता है। 21वीं शताब्दी में महिलाओं की भूमिका सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक रूप से बदली है जहां वे नेतृत्वकर्ता के रूप में अपनी सशक्त भूमिका का निर्वहन कर रही है चाहे वह राजनीति का क्षेत्र हो, व्यापार का क्षेत्र हो और चाहे

वह किसी सामाजिक आंदोलन के प्रणेता के रूप में ही क्यों ना हो वह अपनी भूमिका और भी मजबूत तरीके से निभा रही है।

आज 21वीं शताब्दी की महिलाएं अपनी स्थिति और अस्तित्व को पूर्व की सभी धारणाओं को नकारते हुए सशक्त रूप से स्थापित कर रही है और उन सभी क्षेत्रों में मजबूत भूमिका निभा रही है जिन्हें पुरुषों के अधिपत्य के कारण महिलाओं के योग्य ही नहीं बताया जाता था विज्ञान प्रौद्योगिकी एवं तकनीकी जैसे अत्यंत जटिल और जुझारू रूप से सभी क्षेत्रों में महिलाओं की भूमिका को सदा ही प्रश्नवाचक स्थिति में देखा जाता रहा है लेकिन हाल ही में अमेरिका की एक **एजेंसी अमेरिकन एसोसिएशन ऑफ यूनिवर्सिटी वुमेन** के अनुसार विश्व के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में कुल 34 प्रतिशत महिलाएं अपनी सशक्त भूमिका और मजबूत अस्तित्व को बनाए रखने और उच्च प्रदर्शन करने के लिए जानी जाती है।[8]

भारत में असीमा चटर्जी, किरण मजूमदार शॉ, मुथैया वनिता, टेसी थॉमस और ऋतु करिधल आदि वे महिलाएं हैं जिन्हें किसी अन्य परिचय की आवश्यकता ही नहीं है, बल्कि उनकी ख्याति विश्व में कीर्ति प्राप्त कर रही है । वैश्वीकरण ने निश्चित ही नारी को नवीन पहचान और एक स्वतंत्र आकाश उपलब्ध कराया है जिसमें वह अपनी उड़ान को विस्तार देकर अपनी ऊर्जा और क्षमता का उचित मूल्यांकन कर बुलंदियों के क्षितिज से परे देख सकती हैं किंतु आज भी नारी के लिए समाज में चुनौतियाँ कम नहीं है। नारी होना स्वयं में आज भी एक बड़ी जिम्मेदारी है क्योंकि भविष्य को गर्भ में आकर देने से लेकर वर्तमान को निखारने का दरोमदार नारी के ही कंधों पर होता है फिर चाहे वह किसी भी समाज का हिस्सा क्यों ना हो यथा वैश्वीकरण के दौर में सामाजिक दकियानुसी रूढ़ियों को तोड़ने में महिलाएं सफल तो हुई है किंतु पितृ सत्तात्मक व्यवस्था की जड़ों को कमजोर करना और नारी सशक्तिकरण व अस्मिता के लिए पुरुषों को संवेदनशील होने की आवश्यकता आज भी बनी हुई है जो की शनै शनै ही सही किंतु निश्चित ही सकारात्मक स्थिति में आएगी।

निष्कर्ष:

महिलाओं के सशक्तिकरण हेतु बहुत कुछ किया जाना बाकी है, इस सन्दर्भ में संयुक्त राष्ट्र संघ ने महिलाओं की स्थिति को बेहतर बनाने के लिए कई प्रस्ताव दिए, जैसे स्त्री पुरूष के लिए समान कार्य हेतु समान वेतन, महिलाओं को विभिन्न संसाधनों, रोजगार के अवसर, बाजार व्यवस्था, व्यापार एवं सूचना प्रौद्योगिकी आदि में बराबरी का हिस्सा मिले, कार्यस्थल पर महिलाओं के साथ होने वाले यौन उत्पीड़न एवं भेदभाव को दूर किया जाए। इस तरह वैश्वीकरण ने हमें एक ऐसी पृष्ठभूमि प्रदान करने का कार्य किया है, जिसमें हम विभिन्न लैंगिक पूर्वाग्रहों से बाहर निकल कर एक गरिमापूर्ण जीवन जीने की परिस्थिति उत्पन्न करें, कतिपय विभिन्न देशों में ऐसा हुआ भी है जैसा कि वैश्वीकरण एवं नारीवाद के मध्य संबंध पर 'चो' का मानना है कि वैश्वीकरण अपने आप में नारी युक्त हैं। निष्कर्षतः कहें तो वैश्वीकरण महिला सशक्तिकरण व महिला कामगारों को रोजगार सुरक्षा पर वैश्वीकरण का सकारात्मक व नकारात्मक अर्थात् मिश्रितत प्रभाव पड़ा है। वैश्वीकरण ने जहॉ एक तरफ महिलाओं को नई उँचाईयां दी हैं तो वहीं वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप महिलाओं के समक्ष अनेक समस्याएं भी निकल कर सामने आयी हैं। जैसा कि अपनी पुस्तक 'समसामयिक राजनीतिक सिद्धांत' में नरेश दाधीच ने लिखा है कि आज ऐसा प्रतीत हो रहा है कि यह एक समाप्त न होने वाली प्रक्रिया है क्योंकि इसका क्षेत्र, भाव–प्रवणता, पहुँच और प्रभाव गुणात्मक व संख्यात्मक रूप से विशेष प्रकार का बन चुका है। किन्तु आज विभिन्न देशों द्वारा संरक्षणवाद पर जोर दे कर निजी हित में वैश्वीकरण की अवधारणा को

कमजोर किया जा रहा है। इस प्रकार संक्षेप में कहें तो वैश्वीकरण की प्रक्रिया में महिलाओं की स्थिति में सुधार हुआ है, किन्तु अपेक्षित सुधार अभी भी बाकी है।

सन्दर्भ सूची:

1. *साधना आर्य, निवेदिता मेनन व जिनी लोकनीता (सम्पादक) (2015)–नारीवादी राजनीतिः संघर्ष एवं मुद्दे, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।*
2. *दाधीच, नरेश, समसामयिक राजनीतिक सिद्धान्त, 2015 रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, राजस्थान।*
3. *जैन एवं माथुरः आधुनिक विश्व का इतिहास, 2010, जैन प्रकाशन मंदिर, जयपुर, राजस्थान।*
4. *चौबे, कमल नयन, (अनु0), समकालीन राजनीति–दर्शन : एक परिचय, 2013, पियर्सन, दिल्ली।*
5. *चंदन, संजीव : महिला आरक्षणः मार्ग और मुश्किलें, 2016,* https://www. forwardpress.in/2016/12/mahila-aarkshan-marg-aur-muskile/
6. *विजय लक्ष्मी : 'महिला सशक्तिकरण की कुछ कोशिशें' (2007) कुरूक्षेत्र पत्रिका, मार्च।*
7. *REQUEST FOR PROPOSAL (RFP) For 'Women In Unorganized Sectorsextension://efaidnbmnnnibpcajpcglclefindmkaj/http://ncw.nic.in/sites/default/files/RFPWomeninUnorganizedSectors.pdf*
8. *https://www.aauw.org/resources/policy/position-stem-ed/*
9. *रॉबर्टसन , रॉबी द थ्री वेब्स ऑफ ग्लोबलाइजेशनः ए हिस्ट्री ऑफ ए डेवलपिंग ग्लोबल कंसेशनेस' (2002) ज़ेड बुक्स लिमिटेड , लन्दन एस ई 11 ।*
10. *रोबर्टसन,रोनाल्ड,ग्लोबेलाइज़ेशनःसोशल थ्योरी एंड ग्लोबल कल्चर, 1992,सेज पब्लिकेशन लिमिटेड अमेरिका।*
11. *वैर्लेस्टीन, इमैनुअल , द मॉर्डन वर्ल्ड सिस्टेम पुनर्मुद्रण संस्करण (14 जून 2011) कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय प्रेस, यू एस ए।*
12. *हापकिंस ए.जी. 'ग्लोबलाइजेशन इन वर्ल्ड हिस्ट्री' डब्ल्यू. डब्ल्यू. नॉर्टन एंड को. 2002*

International Research Journal
IJNRD
Research Through Innovation